Research Paper Education

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी चेतना

सतबीर सिहँ

भारतीय समाज में नारी की दशा अलग–अलग समय में अलग–अलग रही है। कभी इसे देवी के रूप में पूजा जाता था तो कभी इसे प्रताड़ित किया जाता रहा है, लेकिन वर्तम. ान समय में नारी की दशा को सुधारने की आवश्यकता है क्योंकि घर की चार दीवारी में होते अत्याचारों से इसे मुक्त कर पुरूष के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर विकास कार्यो में भागीदार बनाना होगा ताकि वह अपना, अपने परिवार का, समाज का व देश का विकास कर सके। इस क्षेत्र में साहित्यकार अपनी अहमं भूमिका निभा सकता है। रामदरश मिश्र जमीन से जुड़े साहित्यकार है। उन्होंने गद्य व पद्य में अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने जैसा देखा वैसा ही अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त किया। उन्होंने नारी की दशा को देखते हुए उसमे चेतना के स्वर भर दिए। उन्होंने नारी पर होते हुए अत्याचार व उनकी दबती हुई आवाज को उजागर किया उन्होंने नारी को शक्ति प्रदान करते हुए हर अत्याचार का विरोध करने के लिए प्रेरित किया जिसका वर्णन इनके उपन्यासों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इन्होंने तेरह उपन्यास लिखें हैं जिनमें से पानी के प्राचीर, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, थकी हुई सुबह, रात का सफर, बीस बरस, दूसरा घर, जल टूटता हुआ में नारी का विशेष चित्रण किया है।

'पानी के प्राचीर' उपन्यास में गुलाबी को गाँव के लोग बुरी नजर से देखते हैं वह इसका विरोध करती है, तब गाँव वाले इसी पर दोष लगाते हैं और एक पंचायत गाँव में आयोि जत करते हैं। तब गुलाबी पंचायत में आकर कहती है– ''मैं जानती हूँ उन लोगों को जो केवल मेरे साथ छिपकर खिलवाड़ करना चाहते थे, हिम्मतपूर्वक मेरा हाथ पकड़ना नहीं। मैं तुम्हारे इशारे पर लट्टू की तरह नाचने की बजाय एक मरद करके बैठ गयी हूँ तो तुम लोगों की छाती पर साँप क्यों लोटा।'' [1] यहाँ गुलाबी अपने पर होते अत्याचारों का खुलकर विरोध करती है।

इसी उपन्यास में नीरू की माँ रूपा नयी पीढ़ी की नारी का प्रतिनिधित्व करती है। वह किसी से डरती नहीं है। गाँव के मुखिया के लड़के महेश के साथ झगड़ा हो जाता है। गाँव का मुखिया अपने बेटे की शिकायत लेकर नीरू के घर में आता है और नीरू को भला बुरा कहता है तब पति के मना करने पर वह अपने पति से कहती है– ''तुम्हें डरना हो तो डरो मैं किसी की दबैल नहीं। मेरे जीते जी किसी की मजाल नहीं जो मेरे लड़कों को आँख दिखाये। सब पहले अपने बहेतू और लफंगे लड़कों को सुधारें।'' [2] यहाँ भी एक नारी की स्पष्ट वादिता नजर आती है। वह गाँव के मुखिया को स्पष्ट जवाब देने को तैयार है। उसके मन में किसी प्रकार का भय नहीं है।

'आकाश की छत' उपन्यास में रूपमती को आधुनिक नारी के रूप में दिखाया गया है। कामरेड़ जगत द्वारा उसे अपने घर पर काम काज न करने के लिए कहा जाता है क्योंकि लोग उस पर लांछन लगा सकते हैं। तब रूपमती कहती है– ''मेरी परवाह न करें। मैं झूठ बात पर जमराज से भी लड़ जाऊँगी। मेरा मरद मुझे झूठ गाली–वाली देगा तो मैं उसे भी ठीक कर दूंगी, या अपने को खत्म कर दूंगी। मैं बकरी बनकर रहने वाली बड़ी जातियों की औरत नहीं हूँ।'' [3] यहाँ नारी चेतना स्पष्ट झलकती है। रूपमती समाज व परिवार की परवाह बिल्कुल नहीं करती वह सच से लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहती है।

'बिना दरवाजे का मकान' उपन्यास में मिश्र जी ने बस की सीट को लेकर हुई तकरार को कुछ इस तरह व्यक्त किया है। एक ताई बस में सवार होती है, वह देखती है कि एक आदमी लेडिज सीट पर बैठा है और लेडिज खड़ी है। वह ताई उस आदमी से कहती है– ''सीट दीजिए यह जनानी सीट है।'' तभी सब लोग मुस्कराते है और कोई भी सीट से नहीं उठ़ता वह लेडिज सीट पर बैठे हुए आदमी का हाथ खींचकर बोली– ''उठ रे, सरम लेहाज नहीं रह गया जनानी खड़ी है और तू कहने पर भी नहीं उठ रहा है।'' [4] यहाँ औरत अपने हक के लिए स्पष्ट कह रही है। आज औरत के अपने हक माँगने में बिल्कुल भी संकोच नहीं है। पुरूषों के अत्याचार के विरूद्ध अपनी आवाज उठा देती है। इसी उपन्यास में दीप के माध्यम से निम्न वर्गीय नारी की आवाज प्रकट की गई है जो किसी भी अत्याचार व अपने स्वावलम्ब के लिए हर किसी का विरोध करती है। जब खुराना साहब की पत्नी दीपा को गालियाँ देती है तब वह उसका विरोध करते हुए कहती है –''देखिये गाली मत दीजिए, हरामखोर होती तो मेरी भी कोठी बन गई होती। बड़े–बडे लोगों का हाथी निगलना कोई नहीं देखता, गरीब लोगों के पाँव तले चींटी भी मर जाती है तो लोग उन्हें हत्यारा कहते हैं। बीबी जी, हम अगर झूठ बोलते हैं तो अपने पेट के लिए, बडे लोग झूठ बोलते है दूसरों की

बरबादी के लिए'' [5] यहाँ एक औरत पर जब आरोप लगाए जाते हैं तब वह उसका विरोध करती है और आरोप लगाने वाले की वास्तविकता देती है। व्यक्ति को पहले अपने अन्दर झांकना चाहिए फिर दूसरे के बारे में कहना चाहिए। अतः नारी चेतना यहाँ स्पष्ट दिखाई देती है। अब वह हर कहीं अत्याचार का विरोध करती है।

'दूसरा घर' उपन्यास में जब राम बहादुर का दोस्त राजू उसकी पत्नी राम कली को रूपयों का प्रलोभन देकर उसके साथ सम्बन्ध बनाना चाहता है तब रामकली उसके इस प्रलोभन को स्वीकार नहीं करती और उसका विरोध करती है और गुस्से में आकर पास में खड़े हुए हंसुवा को उठाकर कहती है– ''इसी से काट दूंगी हराम जादे। मेरे घर को रंड़ी खाना समझ रखा है क्या? मेरा मर्द बाँका जवान है, तु तो उसके पैरों की धूल भी नहीं है।'' [6] यहाँ भी नारी चेतना स्पष्ट झलकती है, जब एक नारी की इज्जत पर कोई दूसरा हाथ ड़ालता है तब वह उसका विरोध करती है। आधुनिक नारी में यह गुण होना चाहिए। उसे चुपचाप सब कुछ सहना नहीं चाहिए।

इसी उपन्यास में जब रामकली का पति उस पर अत्यधिक अत्याचार करता है तब वह अपने पति का भी विरोध करती है वह उसे कहती है– ''अब मैं इसे नहीं सह सकती। बच्चों को लेकर कहीं और रह लूंगी और यह मुझे पीटेगा तो या तो जान दे दूंगी या ले लूंगी।'' [7] यह बात रामकली उस समय कहती है जब उसका पति शराब में सारे पैसे खराब करने लगा और रामकली ने उसे रोकना चाहा और घर का खर्च चलाने के लिए स्वयं काम करने लगी। तब राम बहादुर ने उसे रंड़ी कहा इसी का विरोध करते हुए उपरोक्त बात कही। यहाँ भी एक नारी की चेतना स्पष्ट झलकती है। 'थकी हुई सुबह' उपन्यास में लक्ष्मी नारी के प्रबल रूप को व्यक्त करती हुई अपनी भाभी से कहती है –''क्या हम स्त्रियों की जान नहीं होती, हमारा मन मन नहीं होता, हमारी आबरू आबरू नहीं होती, हमारा निर्णय निर्णय नहीं होता? हमने अपने को इतना तुच्छ और महत्वहीन मान लिया है इसी लिए तो पुरूषों को हमारे साथ कोई ज्यादती करने का साहस होता है।'' [8] यहाँ एक नारी का स्वाभिमान स्पष्ट झलकता है। अब पुरूषों की मनमानी का खुलकर विरोध कर रही है।

इसी उपन्यास में जब लक्ष्मी पढ़ लिखकर अध्यापिका बन जाती है और अपनी पहली कमाई में से अपने पिता के लिए धोती और माँ के लिए साड़ी लाती है तब उसका पिता उसे लेने से मना कर देता है, तब लक्ष्मी अपने पिता से कहती है– ''ठीक है मैं बेटी हूँ न, मेरी चीज छूना पाप है। बेटी–बेटे का भेदभाव माँ–बाप के प्रति संतान के कर्त्तव्य को भी बाँट देता है। पता नहीं किसने यह नियम बना दिया है कि बेटी की हर चीज माँ–बाप के लिए अछूत है तो सुन लीजिए मैं भी कोई निर्जीव चीज नहीं हूँ कि जहाँ जैसे ड़ाल दी जाऊँ पड़ी रहूँगी। जैसे भईया आपकी संतान हैं वैसे मैं भी हूँ जैसे उन्हें इस घर के लिए कुछ करने का हक है वैसे ही मुझे भी है।'' [9] यहाँ भी एक लड़की की आवाज अपने कर्त्तव्य के लिए उठी है। वह भी घर में अपना हक बराबर का जता रही है।

'बीस बरस' उपन्यास में वंदना पूरे गाँव में नई चेतना लाती है। सारे गाँव की औरतों के दुःख–दर्दों की वह सच्ची साथिन है। वह गाँव की छोटी लड़कियों को अपने घर बुला. कर पढ़ाती है। पुरानी परम्पराओं का वह विरोध करती है। रूढ़ियों में फंसी औरतों को वह समझाती है। इसी के बारे में दामोदर बताते हैं –''गाँव में एक अदृश्य जयोति जल रही है, वह भी औरत के द्वारा औरतों में यह तो बहुत ही शुभ परिदृश्य है।'' [10] यहाँ एक नारी द्वारा ग्राम सुधार के लिए किए जा रहे कार्यो की तरफ इशारा किया गया है साथ ही एक नारी पूरे गाँव की नारियों में चेतना जागृत कर रही है अपने हकों के लिए, उनके ऊपर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ और न्याय के लिए आवाज उठाने को।

डॉ0 सीमा वैश्य ने भी अपने प्रकाशित शोध 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों की वैचारिक पृष्ठभूमि' में रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी चेतना का वर्णन करते हुए उनके उप. न्यास 'बिना दरवाजे का मकान' की दीपा को उनके अधि ाकारों के बारे में एक स्त्री कहती है–''अरी छोरी, सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता अपने हक के लिए हम नहीं लडगें तो क्या दूसरा कोई लडेगा? अरी छोरी हमने इन मर्दो के जुल्म देखे और सहे हैं और जब तनकर खड़ी हो गई न तब इनकी ताकत भी देखी है।'' [11]

अतः सारान्श रूप में कहा जा सकता है कि रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी चेतना स्पष्ट रूप से झलकती है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में कहीं न कहीं नारी को चेताया है उनके अधिकारों को बताया है। उनको अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1ण पानी के प्राचीर, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 204
2ण पानी के प्राचीर, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 36
3ण आकाश की छत, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 55
4ण बिना दरवाजे का मकान, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 13
5ण बिना दरवाजे का मकान, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 25
6ण दूसरा घर, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 194
7ण दूसरा घर, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 191
8ण थकी हुई सुबह, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 104
9ण थकी हुई सुबह, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 71
10ण बीस बरस, रामदरश मिश्र, पृ0 98
11ण रामदरश मिश्र के उपन्यासों की वैचारिक पृष्ठिभू. मि, लेखक सीमा वैश्य, पृ0 151, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण 2004।